

गांधीवादी राजनीतिक चिंतन और भारतीय अर्थव्यवस्था

पुरन मल मीना

(एम.ए., एम.फिल.)

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष- राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर (राज.) पिन कोड नं- 301408
मो.न. 9461669111 Mail id - pmmeena11@gmail.com

अनिल कुमार शर्मा

सह आचार्य- राजनीति विज्ञान

राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ अलवर (राजस्थान)

सारांश- महात्मा गांधी का राजनीतिक चिंतन केवल स्वराज की राजनीतिक लड़ाई तक सीमित नहीं था; यह एक समग्र दृष्टि था जिसमें अर्थव्यवस्था नैतिकता, मानव कल्याण और पर्यावरणीय संतुलन के साथ गहराई से जुड़ी हुई थी। गांधीवादी चिंतन स्वदेशी, स्वराज, न्यास सिद्धांत (ट्रस्टीशिप), सरवोदय और विकेन्द्रीकृत ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित है, जो बड़े पैमाने की औद्योगीकरण, शोषण और उपभोक्तावाद की आलोचना करता है। यह शोध पत्र गांधी के आर्थिक विचारों के मूल स्रोतों—हिंद स्वराज, युवा इंडिया और हरिजन लेखों—का विश्लेषण करते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन करता है। स्वतंत्रता के बाद नेहरूवादी मिश्रित अर्थव्यवस्था में गांधीवादी तत्वों (जैसे लघु उद्योग और ग्रामीण विकास) की आंशिक स्वीकृति हुई, लेकिन 1991 के उदारीकरण ने इसे पीछे धकेल दिया। फिर भी, आज आत्मनिर्भर भारत अभियान, सतत विकास लक्ष्य और बढ़ती असमानता के संदर्भ में गांधीवादी मॉडल की प्रासंगिकता पुनः उभर रही है। यह पत्र तर्क देता है कि गांधी की अर्थव्यवस्था न तो पूंजीवाद की नकल है और न ही मार्क्सवाद की; यह एक तीसरा रास्ता है जो नैतिक आत्म-नियमन और स्थानीय स्वावलंबन पर जोर देता है। शोध के उद्देश्यों के अनुरूप, यह विश्लेषण ऐतिहासिक, तुलनात्मक और समसामयिक आयामों को शामिल करता है। निष्कर्ष यह है कि पूर्ण गांधीवादी अर्थव्यवस्था को लागू करना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन इसके चुनिंदा सिद्धांत—जैसे स्थानीय उत्पादन और न्यास—आज की वैश्विक संकट (जलवायु परिवर्तन, बेरोजगारी और असमानता) के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यह मौलिक शोध है जो पुराने स्रोतों का नया संश्लेषण प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द:- गांधीवाद, स्वदेशी, स्वराज, न्यास सिद्धांत, सरवोदय, विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था, भारतीय अर्थनीति, आत्मनिर्भरता, ग्रामीण विकास।

उद्देश्य- इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. गांधीवादी राजनीतिक चिंतन के आर्थिक आयामों (स्वदेशी, न्यास, सरवोदय आदि) को स्पष्ट करना।
2. स्वतंत्र भारत की अर्थव्यवस्था (1950-1991 और उदारीकरण के बाद) पर गांधीवादी विचारों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
3. समसामयिक भारतीय संदर्भ में इन विचारों की प्रासंगिकता और सीमाओं का विश्लेषण करना।
4. एक संतुलित, नैतिक-आधारित वैकल्पिक आर्थिक मॉडल की संभावना पर चर्चा करना।

1. प्रस्तावना: गांधीवादी चिंतन का आर्थिक आधार- महात्मा गांधी ने राजनीति को नैतिकता से अलग नहीं माना। उनके लिए स्वराज केवल ब्रिटिश शासन से मुक्ति नहीं, बल्कि आत्म-नियंत्रण और सामूहिक कल्याण था। हिंद स्वराज (1909) में उन्होंने आधुनिक सभ्यता की

आलोचना की, जिसमें मशीनें, बड़े उद्योग और असीमित उपभोग को मनुष्य के शोषण का साधन बताया। गांधी का मानना था कि अर्थव्यवस्था का उद्देश्य “सबका भला” (सरवोदय) होना चाहिए, न कि कुछ लोगों की समृद्धि।

उनके चिंतन में अर्थव्यवस्था राजनीति का अभिन्न अंग थी। ब्रिटिश शासन ने भारत को कच्चे माल का स्रोत और तैयार माल का बाजार बनाया, जिसके विरुद्ध स्वदेशी आंदोलन खड़ा किया। गांधी ने कहा, “स्वदेशी स्वराज की आत्मा है।” यह न केवल राजनीतिक प्रतिरोध था, बल्कि आर्थिक स्वावलंबन का आह्वान था।

2. प्रमुख गांधीवादी आर्थिक सिद्धांत- गांधीवादी राजनीतिक चिंतन की आर्थिक दृष्टि को समझने के लिए उनके प्रमुख सिद्धांतों का विस्तृत विश्लेषण आवश्यक है। ये सिद्धांत न केवल सैद्धांतिक थे, बल्कि व्यावहारिक प्रयोगों (जैसे साबरमती और सेवाग्राम आश्रम) पर आधारित थे। गांधी ने अर्थव्यवस्था को नैतिकता से अलग नहीं माना; उनके अनुसार, आर्थिक गतिविधियां अहिंसा, सत्य और सामाजिक न्याय पर टिकी होनी चाहिए। निम्नलिखित उप-खंडों में इनका विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है।

2.1 स्वदेशी और खादी- स्वदेशी गांधीवादी अर्थ-चिंतन का मूल आधार था। इसका अर्थ केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार नहीं, बल्कि स्थानीय संसाधनों, कौशल और जरूरतों पर आधारित स्वावलंबी उत्पादन प्रणाली था। 1905 के बंग-भंग आंदोलन से शुरू होकर गांधी ने इसे राष्ट्रीय स्तर पर चरखा और खादी के माध्यम से लोकप्रिय बनाया। चरखा मात्र एक औजार नहीं, बल्कि प्रतीक था—यह आत्म-सम्मान, श्रम की गरिमा और आर्थिक स्वतंत्रता का प्रतिनिधित्व करता था। गांधी ने कहा था, “खादी भारतीय स्वराज की कुंजी है।” खादी और कुटीर उद्योगों ने लाखों ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं और दलितों, को रोजगार प्रदान किया। यह बड़े कारखानों की तुलना में श्रम-निर्यातक (labour-intensive) था, जिससे बेरोजगारी कम होती थी। गांधी ने बड़े उद्योगों की आलोचना करते हुए उन्हें “शोषण का साधन” बताया, क्योंकि वे मशीनों के जरिए मानव श्रम को विस्थापित करते हैं और पूंजी के केंद्र में संकेंद्रण को बढ़ावा देते हैं। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने भारत के हस्तशिल्पों को नष्ट कर दिया था; स्वदेशी ने उसकी भरपाई करने का प्रयास किया।

व्यावहारिक रूप से, स्वदेशी ने 1920-22 के असहयोग आंदोलन और 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आर्थिक दृष्टि से यह “लोकल फॉर लोकल” का प्रारंभिक रूप था, जो आज के आत्मनिर्भर भारत अभियान से जुड़ता है। गांधी का मानना था कि स्वदेशी से न केवल आर्थिक निर्भरता समाप्त होगी, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक पुनरुत्थान भी होगा। हालांकि, आलोचकों का कहना है कि यह आधुनिक तकनीकी प्रगति से मेल नहीं खाता, लेकिन

गांधी बड़े पैमाने की मशीनरी के पूर्ण बहिष्कार के पक्ष में नहीं थे—वे केवल उन्हीं मशीनों का समर्थन करते थे जो मानव की सेवा करती हों, न कि उसे गुलाम बनाती हों।

2.2 न्यास सिद्धांत- न्यास सिद्धांत गांधी का सबसे मौलिक और मौलिक योगदान माना जाता है, जो पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच तीसरा रास्ता प्रस्तुत करता है। 1930 के दशक में विकसित यह सिद्धांत कहता है कि अमीर व्यक्ति या पूंजीपति अपनी संपत्ति को ईश्वर या समाज का न्यास (ट्रस्ट) मानें। वे स्वामी नहीं, बल्कि संरक्षक (ट्रस्टी) हैं और संपत्ति का उपयोग समाज के अंतिम व्यक्ति (दलित, गरीब, किसान) के कल्याण के लिए करें। गांधी ने 1942 में प्रो. एम.एल. दांतवाला के डाफ्ट में संशोधन कर न्यास फॉर्मूला तैयार किया, जिसमें संपत्ति का सीमित स्वामित्व, उचित लाभ और सामाजिक उत्तरदायित्व पर जोर था।

यह सिद्धांत *हरिजन* और *युवा इंडिया* के लेखों में विस्तार से आया है। गांधी ने लिखा, “धन का उपयोग धनी व्यक्ति द्वारा समाज के हित में होना चाहिए, न कि व्यक्तिगत भोग के लिए।” यह मार्क्सवादी राष्ट्रीयकरण से अलग था क्योंकि इसमें हिंसा या जबरन छीनने की जगह नैतिक परिवर्तन और स्वैच्छिक त्याग था। पूंजीवाद की तुलना में यह शोषण को रोकता था, क्योंकि ट्रस्टी को केवल “उचित” आय मिलती। व्यावहारिक चुनौतियां अवश्य थीं—कई पूंजीपतियों ने इसे आदर्शवादी माना—फिर भी यह कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) और आधुनिक फिलैंथ्रोपी का पूर्व रूप है। न्यास सिद्धांत राजनीतिक चिंतन से जुड़ा था, क्योंकि गांधी के अनुसार आर्थिक असमानता हिंसा को जन्म देती है। यह अहिंसा का आर्थिक आयाम था। आज की बढ़ती असमानता (जैसे ओक्सफैम रिपोर्ट्स में उल्लिखित) के संदर्भ में यह अत्यंत प्रासंगिक है। गांधी इसे कानूनी रूप देने के पक्षधर थे, लेकिन मुख्य बल नैतिक शिक्षा पर था।

2.3 सर्वोदय और विकेंद्रीकरण - सर्वोदय (“सबका उत्थान”) गांधीवादी अर्थव्यवस्था का नैतिक शिखर था। जॉन रस्किन की पुस्तक *Unto This Last* से प्रेरित यह अवधारणा कहती है कि विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, न कि केवल औसत या कुल GDP में वृद्धि हो। गांधी को अर्थव्यवस्था का केंद्र बनाना था, जहां कृषि मुख्य हो, लघु उद्योग सहायक हों और सहकारिता (cooperatives) सामूहिक प्रयास सुनिश्चित करें।

विकेंद्रीकरण का अर्थ था शक्ति, संसाधन और निर्णय-प्रक्रिया का विकेंद्रीकरण—बड़े शहरों और केंद्रीकृत उद्योगों से बचना। गांधी ने “ग्राम स्वराज” की कल्पना की, जिसमें प्रत्येक गांव एक स्वावलंबी गणराज्य हो। सेवाग्राम प्रयोग और वर्धा शिक्षा योजना इसके उदाहरण थे। यहां कृषि, पशुपालन, खादी, लघु उद्योग और बुनियादी शिक्षा एकीकृत रूप से चलते थे। बड़े उद्योग केवल राष्ट्रीय आवश्यकताओं (रेल, इस्पात) तक सीमित रहते।

सर्वोदय ने भूदान और ग्रामदान आंदोलन को जन्म दिया। यह प्राचीन भारतीय ग्राम-व्यवस्था (पंचायत) और ईशावास्य उपनिषद (“ईशावास्यमिदं सर्वम्”—सब कुछ ईश्वर का है, अतः साझा उपयोग) से प्रेरित था। टॉलस्टॉय और रस्किन ने भी प्रभाव डाला, लेकिन गांधी ने इन्हें भारतीय संदर्भ में ढाला।

आर्थिक दृष्टि से यह मॉडल पर्यावरणीय संतुलन, कम ऊर्जा खपत और सामाजिक सद्भाव सुनिश्चित करता था। आधुनिक चुनौतियों जैसे शहरी पलायन, जलवायु परिवर्तन और किसान संकट में सर्वोदय एक विकल्प प्रस्तुत करता है—एमएनआरईजी या पंचायती राज व्यवस्था में इसके कुछ अंश दिखते हैं। ये तीनों सिद्धांत एक-दूसरे से जुड़े हैं: स्वदेशी आत्मनिर्भरता देता है, न्यास न्याय सुनिश्चित करता है और सर्वोदय समग्र कल्याण। गांधी ने इन्हें प्रयोगात्मक बनाया, जो आज भी नीति-निर्माण के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

3. स्वतंत्र भारत में गांधीवादी प्रभाव- स्वतंत्रता के बाद गांधीवादी विचार पूरी तरह लागू नहीं हुए। नेहरू की औद्योगिक नीति ने बड़े उद्योगों को प्राथमिकता दी, लेकिन प्रथम पंचवर्षीय योजनाओं में लघु उद्योग और सामुदायिक विकास कार्यक्रम गांधी की छाप दिखाते थे। जे.सी. कुमारप्पा जैसे शिष्यों ने गांधीवादी योजना तैयार की, जिसमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर जोर था।

भूदान आंदोलन (विनोबा भावे) और सर्वोदय आंदोलन ने गांधी के विचारों को जीवित रखा। लेकिन 1991 के आर्थिक सुधारों ने उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण को अपनाया, जिससे असमानता बढ़ी और गांव खाली होने लगे। फिर भी, खादी ग्रामोद्योग आयोग और सहकारी आंदोलन जैसे संस्थान गांधी की विरासत हैं।

4. समसामयिक प्रासंगिकता और चुनौतियां- आज भारत में बेरोजगारी, पर्यावरणीय संकट, किसान आंदोलन और बढ़ती अमीर-गरीब खाई गांधीवादी चिंतन की याद दिलाती है। “आत्मनिर्भर भारत” अभियान स्वदेशी का आधुनिक रूप लगता है—स्थानीय उत्पादन, लोकल फॉर लोकल। सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में गांधी की “सादा जीवन, उच्च विचार” की गूंज है। कुमारप्पा की “इकोनॉमी ऑफ परमानेंस” आज क्लाइमेट चेंज के दौर में प्रासंगिक है। न्यास सिद्धांत CSR (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी) से आगे जाकर नैतिक पूंजीवाद का मॉडल प्रस्तुत करता है।

चुनौतियां:

- वैश्वीकरण के दबाव में स्थानीय अर्थव्यवस्था टिकाना कठिन।
- युवा पीढ़ी की उपभोक्तावादी मानसिकता।
- राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी।
- फिर भी, डिजिटल युग में “लोकल फॉर लोकल” को टेक-सक्षम बनाकर (जैसे ई-कॉमर्स से कटीर उद्योग) इसे लागू किया जा सकता है।
- निष्कर्ष-** गांधीवादी राजनीतिक चिंतन भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक नैतिक कंपास है। यह विकास को मात्र GDP नहीं, बल्कि मानव और प्रकृति के संतुलन से जोड़ता है। स्वतंत्र भारत ने इसके कुछ बीज बोए, लेकिन पूर्ण वृक्ष नहीं उगा पाया। आज जब विश्व पूंजीवाद संकट में है, गांधी का तीसरा रास्ता—नैतिक, विकेंद्रीकृत और स्वावलंबी अर्थव्यवस्था—न केवल प्रासंगिक है, बल्कि आवश्यक भी। भारत को इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए: ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करना, न्यास को कानूनी रूप देना और शिक्षा में गांधीवादी मूल्यों को शामिल करना। तभी “सबका साथ, सबका विकास” सार्थक होगा। यह शोध सुझाव देता है कि नीति-निर्माताओं को गांधी को केवल प्रतीक नहीं, बल्कि व्यावहारिक मार्गदर्शक मानना चाहिए।

संदर्भ सूची :-

1. गांधी, एम.के. (1909). *हिंद स्वराज या भारतीय स्वराज*. नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
2. गांधी, एम.के. (1947). *इंडिया ऑफ माय ड्रीम*. नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद।
3. गांधी, एम.के. (1960). *ट्रस्टीशिप*. नवजीवन प्रकाशन हाउस, अहमदाबाद।
4. कुमारप्पा, जे.सी. (1951). *गांधीवियन इकोनॉमिक थॉट*. सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।
5. कुमारप्पा, जे.सी. (1945). *इकोनॉमी ऑफ परमानेंस*. नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
6. दास, ए. (1979). *फाउंडेशंस ऑफ गांधीवियन इकोनॉमिक्स*. स्ट. मार्टिन्स प्रेस, न्यूयॉर्क।
7. नारायण, एस. (1970). *रिलेवेंस ऑफ गांधीवियन इकोनॉमिक्स*. नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
8. कर्माकर, ए.के. (2023). “हाउ रिलेवेंट इज द गांधीवियन पॉलिटिकल इकोनॉमी फॉर टुडेज इंडिया?” MPRA पेपर नंबर 119582, म्यूनिख।
9. पारीख, बी. (2007). *गांधी: हिज पॉलिटिकल एंड इकोनॉमिक थॉट*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. भारत सरकार (2020). *आत्मनिर्भर भारत अभियान दस्तावेज*.
11. राव, वी.के.आर.वी. (1982). “गांधीवियन इकोनॉमिक्स” इन *एसेज इन गांधीवियन इकोनॉमिक्स* (संपा.), दीवान और लुट्जा।
12. शर्मा, एस.के. (2008). “गांधीवियन स्ट्रेटजीज फॉर डेमोक्रेटिक डिसेंट्रलाइजेशन”। *जर्नल ऑफ इंडियन पॉलिटिकल साइंस*।
13. हरिजन (1939-1942). विभिन्न अंक, गांधी के आर्थिक लेख।
- युवा इंडिया (1920-1930). गांधी के स्वदेशी और स्वराज संबंधी लेख।